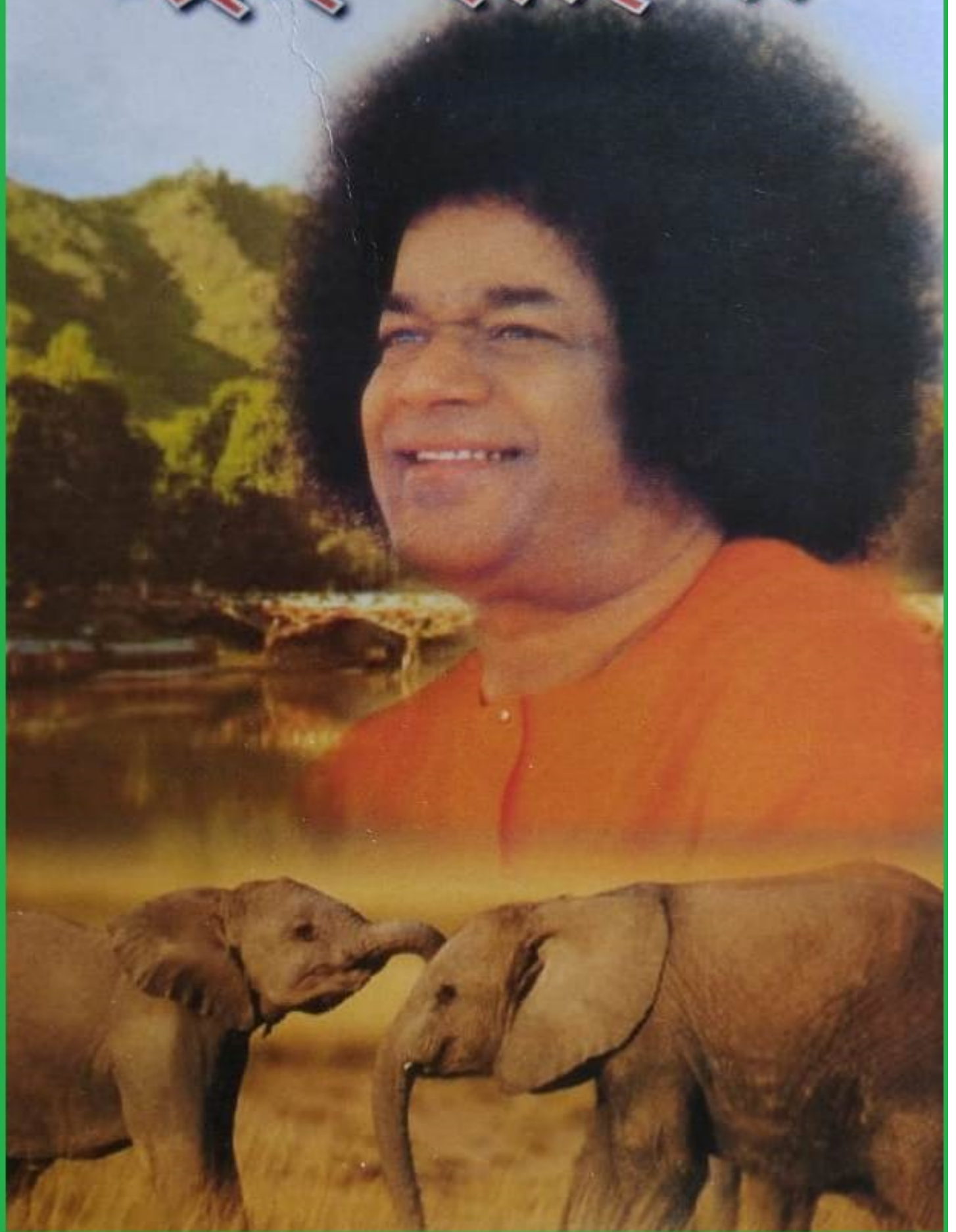


प्रेम वाहिनी



स्वाध्याय

वेद और पुराणों का नित्य अध्ययन और श्रवण करना चाहिए। भगवन्नाम का कीर्तन और श्रवण करना चाहिए। कुछ व्याधियों के लिए बाह्य उपचार हेतु कुछ लेप, मलहम, मालिश, चीर-फाड़ आदि दवाइयाँ निर्धारित की जाती हैं; जबकि अन्य रोगों के लिए आंतरिक उपचार की औषधियाँ बताई जाती हैं। इस विश्व व्यापी भव-रोग (जन्म-मृत्यु, आवागमन का चक्कर) के लिए श्रवण, कीर्तन आदि दूसरे प्रकार की औषधियाँ बतलाई गई हैं, इन्हीं से ब्रह्मोपचार और आंतरिक शोधन होता है। व्यक्ति को भगवान नाम का स्वयं उच्चारण और श्रवण करना होता है। साधक गुरु, भगवान और उसके भक्तों की कृपा प्राप्त कर सकता है। परन्तु यह सब कृपायें तब तक पूरा-पूरा लाभ नहीं दे सकती जब तक कि व्यक्ति एक दूसरी कृपा, अपने अन्तःकरण की कृपा, प्राप्त नहीं कर पाता है। बिना इस कृपा के व्यक्ति दुःख के गहरे गर्त में निमग्न रहता है, शेष अन्य कृपायें कुछ भी कर पाने में विफल रहती हैं।

भगवान् की कृपा सहज में सुलभ नहीं होती है। 'मैं पन' की भावना अहंकार जिसके वशीभूत होकर जीव अपने कर्तापन की घोषणा करता है, को हृदय से समूल उच्छेदन कर डालना चाहिए। प्रत्येक के हृदय में, चाहे वह विद्वान् हो या अशिक्षित, भगवान् को जानने की उत्कृष्ट अभिलाषा होनी चाहिए। भगवान तो अपने सभी बच्चों से समान प्रेम करता है, क्योंकि प्रकाश का गुण है कि वह हर वस्तु को आलोकित करे। उस आलोक का सदुपयोग कुछ लोग सच्छास्त्रों के अध्ययन में कर सकते हैं; अन्य लोग अपने दैनिक कार्यों जो भी हों, की पूर्ति में कर सकते हैं। इसी प्रकार भगवन्नामोच्चार करते हुए व्यक्ति भगवान के साक्षात्कार की दिशा में आगे बढ़ सकता है, जबकि अन्य लोग दुष्टता के कार्यों को भी कर सकते हैं। यह सब इस बात पर निर्भर करता है कि तुम प्रकाश का किस प्रकार प्रयोग करते हो। भगवान् का नाम तो, सदा सर्वदा निष्कलंक रहता है।